International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 02, No. 01, January - March, 2020, pp.180-184

# माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, भावात्मक लब्धि एवं बुद्धिलब्धि में सम्बन्ध

डॉ. नवप्रभाकर लाल गोस्वामी*
श्रीमती बबीता शर्मा**

## परिचय

शिक्षा समाज निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिकता के इस युग में समाज शिक्षा के अभाव में आर्थिक प्रगति उन्नति विकास जो कि राष्ट्र के निर्माण के स्तम्भ होते हैं उन्हें प्राप्त नहीं कर सकता। जैसे कि बालक विद्यालय में प्रवेश लेता है उसका व्यवहार परिवर्तित होता है, शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा से सम्बन्धित है जो विद्यार्थी के ज्ञान, कौशल को प्रदर्शित करते हैं विद्यालय के विषयों के द्वारा प्राप्त ज्ञान ही शैक्षिक उपलब्धि है।

अन्य रूप में शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ विद्यार्थी की उपलब्धियों से है जो विद्यालय में अनेक विषयों को पढ़कर, लिखकर, समझकर प्राप्त करता है शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी की बुद्धिलब्धि पर निर्भर करती है। बालक की बुद्धि के आधार पर ही विद्यालय में ज्ञान, कौशल ग्रहण करता है एवं शैक्षिक स्तर में श्रेणी आदि की प्राप्ति में उसकी बुद्धि का महत्वपूर्ण योगदान है। शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण द्वारा प्राप्त अंक विद्यार्थी के ज्ञान कौशल के माध्यम से अन्य विद्यार्थियों से तुलना करते हैं एवं कक्षा में उनकी स्थिति का निर्धारण करते हैं।

आज विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि में केवल बुद्धिलब्धि का स्थान प्रमुख नहीं बल्कि विद्यार्थी में भावात्मक लब्धि का होना भी अत्यन्त आवश्यक है। भावात्मक अभिवृद्धि एक अभियोग्यता ही है जो यह व्यक्त करती ळै कि हम अपने कौशल एवं ज्ञान को किस प्रकार उचित प्रयोग कर सकते हैं। उदाहरण स्वरूप व्यक्ति की बुद्धिलब्धि उच्च है एवं वह अपना कार्य कुशलता पूर्वक कर लेता है तो उसकी यह भिन्नता ही भावात्मक बुद्धिलब्धि कहलाती है। इस प्रकार का कौशल व्यक्ति में आत्म संतुष्टि प्रदान करता है।

इस शोध की बड़ी संख्या विद्यालय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भावात्मक लब्धि बुद्धिलब्धि को मापने में सहायता प्रदान करती है इसके लिए शोधकर्त्री अध्ययन से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को उनकी बुद्धिलब्धि एवं भावात्मक लब्धि के आधार पर निर्धारित करने में सहायता प्रदान करेगा।

## उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, भावात्मक लब्धि एवं बुद्धिलब्धि को ज्ञात करना
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, भावात्मक लब्धि एवं बुद्धिलब्धि में सह सम्बन्ध को ज्ञात करना
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, भावात्मक लब्धि एवं बुद्धिलब्धि में लिंग सम्बन्धी अन्तरों को ज्ञात करना
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, भावात्मक लब्धि एवं बुद्धिलब्धि में विद्यालय के प्रकारों के आधार पर अन्तर ज्ञात करना

* प्राचार्य, विद्यास्थली महिला शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** यूनिवर्सिटी ऑफ टैक्नोलॉजी, जयपुर, राजस्थान।

## परिकल्पनाएँ

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं भावात्मक लब्धि में सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धिलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि एवं भावात्मक लब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
- माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की भावात्मक लब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भावात्मक लब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

## परिसीमाएँ

प्रस्तुत शोध के कार्य को समयाभाव के कारण, सीमाबद्ध किया है इस अध्ययन की प्रमुख सीमाएँ निम्न है–

- इस अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर के 150 विद्यार्थियों को लिया गया है।
- इस अध्ययन में जयपुर शहर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों जो कि निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् है को लिया गया है।

## अध्ययन विधि

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भवात्मक लब्धि एवं बुद्धिलब्धि में सह सम्बन्ध का अध्ययन एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन है इसलिए इसमें सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

## न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में जयपुर शहर के माध्यमिक स्तर के 150 विद्यार्थियों को जो कक्षा 10 में अध्ययनरत् है न्यादर्श पद्धति द्वारा चुने गए हैं।

## उपकरण

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भावात्मक लब्धि एवं बुद्धिलब्धि में सम्बन्ध को ज्ञात करने के लिए निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया है।

- भावात्मक लब्धि मापनी (थेरा आहूजा सरबजीत)
- मानसिक योग्यता परीक्षण (डॉ. श्याम स्वरूप जलोटा)
- शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा 9वीं के वार्षिक अंक

## अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी विधि

प्रयुक्त अनुसंधान में प्रदत्तों के विश्लेषण एवं संशलेषण हेतु निम्न सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- टी. मूल्य
- सह सम्बन्ध गुणांक

**निष्कर्ष**

- **परिकल्पना – 1**

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं भावात्मक लब्धि में सह सम्बनध पाया जाता है। आर की सार्थकता के मान 0.05 सर्थकता स्तर पर 159 तथा 0.01 स्तर पर .208 है जबकि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं भावात्मक लब्धि में सहसम्बन्ध गुणांक 0.288 है जो गणितीय मूल्य से अधिक है।

अतः इस अध्ययन की परिकल्पना माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं भावात्मक लब्धि में सह सम्बन्ध पाया जाता है स्वीकृत होती है।

- **परिकल्पना – 2**

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धिलब्धि में सार्थक समबन्ध पाया जाता है।

आर की सार्थकता मान 0.05 स्तर पर 1.59 तथा 0.01 सार्थकता स्तर .208 है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धिलब्धि का सह सम्बन्ध गुणांक 0.234 है जो गणितीय मूल्य से अधिक है।

अतः इस अध्ययन की परिकल्पना माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धिलब्धि में सह सम्बन्ध पाया जाता है स्वीकृत होती है।

- **परिकल्पना – 3**

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि एवं भावात्मकलब्धि में सह सम्बन्ध पाया जाता है।

आर की सार्थकता स्तर का मान 0.05 सार्थकता स्तर 1.59 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर 0.08 है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि एवं भावात्मक लब्धि में सहसम्बन्ध गुणांक 0.535 है जो कि गणितीय मूल्य से अधिक है अर्थात उसके सहसम्बन्ध पाया जाता है।

अतः इस अध्ययन की परिकल्पना माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि एवं भावात्मक लब्धि में सह सम्बन्ध पाया जाता है स्वीकृत होती है।

- **परिकल्पना – 4**

माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की सार्थकता जांच हेतु टी. मूल्य 1.36 पाया गया।

149 के स्वातंत्रय अंश पर सांख्यिकी मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.61 है जो कि गणितीय मूल्य के कम है।

अतः परिकल्पना माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है स्वीकृत होती है।

- **परिकल्पना – 5**

माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की भावात्मक लब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता। माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की भावात्मक लब्धि की सार्थकता जांच हेतु टी. मूल्य 0.86 पाया गया।

149 के स्वातन्त्र्य अंश पर सांख्यिकी मूल्य 0.05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.61 है जो कि गणितीय मूल्य से कम है।

अतः माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की भावात्मक लब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पया जाता, परिकल्पना स्वीकृत होती है।

- **परिकल्पना – 6**

माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता । माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि की सार्थकता जांच हेतु टी. मूल्य 7.06 है।

149 के स्वातन्त्रय अंश पर सांख्यिकी मूल्य 0.05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.61 है जो कि गणितीय मूल्य से अधिक है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि निजी एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

- **परिकल्पना – 7**

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता ।

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की सार्थकता जांच करने हेतु शैक्षिक उपलब्धि का टी. मूल्य 1.52 पाया गया।

149 के स्वातत्रंय अंश पर सांख्यिकी मूल्य 0.05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.61 है जो कि गणितीय मूल्य कम है।

अतः माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि सार्थक अन्तर नही पाया जाता परिकल्पना स्वीकृत होती है।

- **परिकल्पना – 8**

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर नही पाया जाता।

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की बुद्धिलब्धि की सार्थकता जांच करने हेतु बुद्धिलब्धि का टी. मूल्य 1.15 पाया गया।

149 के स्वातत्रंय अंश पर सांख्यिकी मूल्य 0.05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.61 है जो कि गणितीय मूल्य कम है।

अतः माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की बुद्धिलब्धि सार्थक अन्तर नही पाया जाता परिकल्पना स्वीकृत होती है।

- **परिकल्पना – 9**

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भावात्मक लब्धि में सार्थक अन्तर नही पाया जाता।

माध्यमिक स्तर के छात्र एव छात्राओं की भावात्मक लब्धि की सार्थकता जांच करने हेतु बुद्धिलब्धि का टी. मूल्य 2.03 पाया गया।

149 के स्वातत्रय अंश पर सांख्यिकी मूल्य 0.05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.61 है जो कि गणितीय मूल्य कम है।

अतः माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भावात्मक लब्धि में सार्थक अन्तर नही पाया जाता परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि छात्र एवं छात्राओं की भावात्मक लब्धि में कोई अन्तर पाया जाता है।

## शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भावात्मक लब्धि एवं बुद्धिलब्धि में सहसम्बन्ध पाया गया है।

निजी माध्यमिक विद्यालय व सरकारी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भावात्मक लब्धि में कोई अन्तर नही पाया गया जबकि निजी माध्यमिक विद्यालय व सरकारी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

इसका कारण सामान्यतः निजी माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक लम्बे समय तक बिना स्थानान्तरण के विद्यार्थियों के निकट रहते है। जिससे वे उनकी रूचि, सीमा क्षेत्र आदि को उचित रूप में समझ पाते है इसलिए उनकी बुद्धिलब्धि अधिक है जबकि सरकारी माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक स्थानान्तरण के कारण विद्यार्थियों के सम्पर्क में नही रह पाते।

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि भावात्मक लब्धि एवं बुद्धिलब्धि में कोई अन्तर नही पाया गया।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


⇒ अरोड़ा, आर.के., ''इंटरक्शनल इफेक्ट ऑफ क्रियेटिविटि एण्ड इन्टेलीजेन्सी ऑन इमोशनल स्टेविलिटी एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट''

⇒ आलपोट्र, सी. डब्ल्यू., ''एडेन्डबुक ऑफ सोशन साइकोलोजी 1535'' प्रो.पी. 798–844

⇒ भाटिया, एच.आर., ''टैक्टबुक ऑफ एजूकेशनल साइकोलोजी'' एशिया पब्लिशिंग हाउस, न्यू दिल्ली, 1965

⇒ बेस्ट, जे. डब्ल्यू., ''रिसर्च इन एजूकेशन'' प्रेक्टिस हाल इंक इग्लक्ड क्लाफीसस एन.जे. 1959

⇒ बीनेट, ए., द डवलपमेंट ऑफ इन्टेलीजेंस इन चिल्ड्रन, ट्रासलेटेस बाप द इस किटेस्क बल्टीमोर, विलियन्स ऑफ विलियम्स कॉ, 1916

⇒ बुच, एम.बी., ''थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन एन.सी.ई.आर.टी., न्यू दिल्ली'' 1987

⇒ बुच, एम.बी.,''फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन एन.सी.ई.आर.टी., न्यू दिल्ली'' 1992

⇒ बुच, एम.बी., ''फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन एन.सी.ई.आर.टी., न्यू दिल्ली'' 1997

⇒ केटल, आर.बी., ए गाईड द मेनट्रल टेस्टिंग लन्दन यूनिवर्सिटी ऑफ लन्दन प्रेस 1948

⇒ ''अचीवमेन्ट इण्डिया एजूकेशन एक्सड्रक्टस'' एन.सी.ई.आर.टी. वाल्यूम 2 जुलाई

⇒ गैरेट, एच.ई., ''स्टेटिस्टीक इन साइकोलाजी एण्ड एजूकेशन'' 1976

⇒ कपिल, एच.के., ''अनुसंधान की विधियां (व्यवहार परक विज्ञानों मे)'' प्रिन्टे पैलेस, कमला नगर, आगरा, 1998

⇒ गिरिजा, आर.पी., ''ए स्टडी ऑफ इन्टेलेक्युअल एण्ड इन्टेलेक्चुअल फैक्टर इन एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ एडवान्स एड डिसएडवान्स स्टूडेन्ट ऑफ प्रोफेशनल कॉलेज'' पी.एच.डी. कानपुर यूनिवर्सिटी

⇒ आहूजा, प्रीति, ''इफैक्ट ऑफ सेल्फ लर्निग मोड्यूल ऑन अचीवमेन्ट इन एनवायरमेन्टल एजूकेशन इन रिलेशन टू अल्ट्रिज्म एण्ड इमोशनल इन्टेलीजेन्सी'' पी.एच.डी. एजूकेशन पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़ 2002

⇒ लाभ सिंह, द्वारका प्रसाद महेश भार्गव, ''मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी के मूल आधार'' प्रिन्ट पेलेस कमला नगर, आगरा, 2000 बारहवां संस्करण


❖◆❖